Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 GISRRJ | Volume 4 | Issue 6 | ISSN : 2582-0095

युधिष्ठिरविजय महाकाव्य में वर्णित समाज के धार्मिक स्वरूप का अध्ययन

डॉ0 संगीता अग्रवाल
एसोसिएट प्रोफेसर
विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग
आर्य कन्या पी0जी0 कालेज हापुड़, उत्तर प्रदेश, भारत।

विजय कुमार यादव
शोधच्छात्र
आर्य कन्या पी0जी0 कालेज हापुड़
सम्बद्ध चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

Article Info
Volume 4 Issue 6
Page Number: 01-05
Publication Issue :
November-December-2021
Article History
Accepted : 05 Nov 2021
Published : 15 Nov 2021

सारांश– भारत भूमि पर विश्व के लगभग सभी धर्मों के समुदाय रहते हैं। समय के साथ–साथ उनका भारतीकरण भी हुआ। सभी धर्मों के समान धार्मिक नियम आपसी प्रेम सद्भाव, भाईचारे, सुविचार, सत्कर्म पर बल दिया गया है। वर्तमान में कुछ संकीर्णवादी विचारधारा के लोग समाज में सम्प्रदायवाद को बढ़ावा दे रहे हैं। हमें इसे बचाना है, क्योंकि सच्चा धर्म मानवता का है जो हमें पतन से रोकता है।

मुख्य शब्द – युधिष्ठिरविजय, महाकाव्य, समाज,धार्मिक, महाभारत,साहित्य।

भारतीय मनीषियों ने अध्ययन, चिन्तन और अनुभव के आधार पर सुख– शान्तिपूर्ण जीवन–यापन की जो पद्धति खोज निकाली है वह धर्म है। महाभारत के अनुशासन पर्व में आचार (सदाचार) को धर्म का लक्षण माना गया है।

आचारलक्षणो धर्मः सन्तश्चारित्रलक्षणः।
साधूनां च यथा वृत्तमेतदाचारलक्षणम्।।[1]

उद्योग पर्व में कहा गया है कि आचार से ही धर्म फलीभूत होता है।[2] धर्म शब्द घृज् धारणे धातु से मन् प्रत्यय लगकर सिद्ध होता है जिसका अर्थ है सहारा देना या धारण करना। महाभारत में धारण करने वाले को धर्म कहा गया है। धर्म प्रजा को धारण करता है।[3] वैशेषिक दर्शन में कहा गया है– **'यतोऽभ्युदयानिः श्रेयससिद्धिः स धर्मः।'**[4] जिससे इस लोक में अभ्युदय और परलोक में कल्याण की प्राप्ति हो वही धर्म है।

धर्म तो मनुष्य के जीवन की वह सामान्य पद्धति है जिसको अपनाकर चलने से पग–पग पर विग्रह तथा विनाश का समापन होता है। धर्म का अवलम्बन लेकर चलने से जीवन दिन–दिन उन्नति की ओर अग्रसर होता चलता है। उन्नति पूर्ण जीवन यापन करना ही मनुष्यता है इसके विपरीत अधोगामी जीवन जीना और कुछ भी हो मानवता तो नहीं ही है।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

युधिष्ठिर विजय महाकाव्य के अनुशीलन से स्पष्ट होता है कि महाकवि वासुदेव ने महाकाव्य में धर्म के स्वरूप को मनोरम ढंग से प्रस्तुत किया है–

सदसद् विचारी वह धर्म, क्षमाशील उन पाण्डवों की परीक्षा लेने की इच्छा से प्रसन्न होकर मृग रूप से ब्राह्मण के भाण्ड (अरणि–युग्म) को लेकर भागा–

स विचारी क्षान्तेषु प्रयोक्तुकामाः प्रभुः परीक्षां तेषु।
अहरत सारङ्गत्वाद् द्विजस्य भाण्डं मुदः प्रसारं गत्वा।।[5]

धर्म में रमण करने वाले राजा युधिष्ठिर ने अपने प्रसन्न पिता धर्म से वर प्राप्त किये और फिर धर्म के अन्तर्हित होने पर युधिष्ठिर ने ब्राह्मण को आरणि–युग्म समर्पित कर दी।[6] जप–तप सेवा आदि पवित्र कार्यों में लगे रहने के कारण दोनों देवियों को साधु प्रदान किया गया था।[7] धर्म से श्रेष्ठ संकल्पों वाले अत्यन्त धर्मात्मा युधिष्ठिर को प्राप्त किया।[8]

देव और देवियों का पूजन

युधिष्ठिर विजय महाकाव्य में महाकवि वासुदेव ने देवताओं के माहात्म्य को प्रकट किया है। जिसमें महाकवि ने सर्वप्रथम भगवान शंकर की वन्दना किया है–

प्रदिशतु गिरिशः स्तिमितां ज्ञानदृशं वः श्रियं च गिरि शास्तिमिताम्।
प्रशमितपरमदमायं सन्तः संचिन्तयन्ति परमदमा यम्।।[9]

इसी प्रकार से लक्ष्मी और वाग्देवी सरस्वती दोनों देवियों ने समान रूप से विष्णु का आश्रय प्राप्त किया था। अपने पति के द्वारा पूजन अर्चन के लिए प्रेरित किये जाने पर अत्यन्त विनम्र भाव के साथ कुन्ती ने यम, वायु और इन्द्र की पूजा की।[10] पवित्र जप, तप करने वाली दोनों देवियों कुन्ती तथा माद्री की महत्ता का वर्णन है–

श्रितपरमाद्रीशान्तं पाण्डुं कुन्ती तथैव माद्री शान्तम्।
तं भर्तार भार्ये न कदाचिज्जहतुरभिमतारम्भार्ये।।[11]

अर्जुन अपने द्वारा किये गये कार्यों से ग्लानि का अनुभव करते हैं। वे भगवान शंकर से क्षमा माँगते हैं।[12] महाकाव्य में देवताओं में बलधारी बलदेव, अर्जुन तथा भगवान श्रीकृष्ण एवं सुभद्रा का वर्णन हुआ है।[13] विष्णु ने बलभद्र के छोटे भाई कृष्ण के रूप में यादव कुल में जन्म लिया जिनकी माता देवकी थी। युद्ध के प्रारम्भ में शंख बजने पर देवतागण युद्ध देखने के लिए आकाश में आ गये।

प्राकृतिक तत्वों की पूजा

प्रत्येक भारतीय का प्रकृति से अनादि काल से सम्बन्ध रहा है। प्रकृति की गोद में ही वह खेला एवं पला बढ़ा है। अपने सुख दुःखादि की छाया उसको प्रकृति के पदार्थों में भी दिखलायी देती है। शायद इसीलिए संस्कृत साहित्य का कवि प्राकृतिक दृश्यों का चित्रण किये बिना उसकी कृति अधूरी रह जाती है।

युधिष्ठिर विजय महाकाव्य में महाकवि ने प्राकृतिक तत्वों का वर्णन बड़े ही मनोरम ढंग से प्रस्तुत किया है–पाण्डवों ने पैदल ही नदी, समुद्र, वन और धरती को आच्छादित कर देने वाली माँ गंगा को पार किया–

तैः क्षणदावेलायां संछन्नसरित्समुद्रदावेलायाम्।
अधरितसुरसंपद्भिः सुरनद्याः पदमतारि सुरसं पद्भिः।।[14]

महारानी कुन्ती ने विनायक (गणपति) और सूर्य को सन्तुष्ट करके अपने पति के द्वारा अर्चन के लिए प्रेरित किये जाने पर अत्यन्त सत्कार के साथ यम, वायु और इन्द्र की पूजा की।[15]

शिशिर ऋतु में वनभूमि पर कुन्द नामक पुष्पों ने भगवान श्रीकृष्ण की मुस्कराहट के समान सफेद कुन्द पुष्प जंगल में खिलने लगे।[16]

यज्ञ विधान

वैदिक काल से लेकर आज तक चारों वेदों में यज्ञ का बहुत अधिक महत्व बताया गया है। धार्मिक दृष्टिकोण से युधिष्ठिर विजय महाकाव्य के वर्णन से स्पष्ट होता है कि उस समय यज्ञ, तप, दान आदि का महत्व सर्वाधिक था, इसलिए सर्वत्र यज्ञ होते थे।

शरद् काल में मरीचि आदि सप्तर्षियों ने अपने गृहों में जो मुक्तावलियाँ डाली थी वह सब भूत यज्ञ के रूप में छोड़ी गयी।[17] अभिमन्यु जो तेज में अपने पिता के समान था महान उत्सवों से पूर्ण यज्ञ को करने वाला था।

नारदमुनि ने सम्पूर्ण राजनीति का उपदेश देकर अपनी वाणी से गम्भीर विचारों को उत्पन्न करते हुए हर्ष के कारण सुन्दर मुखवाले राजा युधिष्ठिर को राजसूय यज्ञ करने की आज्ञा दी–

स वचोभी राजनयं निगद्यं निखिलं धियो गभीरा जनयन्।
आत्तपरमसौमुख्य नृपमशिषत्कर्तुमध्वरमसौ मुख्यम्।।[18]

अपार जन समूह से सुन्दर उस राजसूय यज्ञ में युधिष्ठिर ने लोगों के पूजन में अपने छोटे भाई सहदेव को नियुक्त किया था। राजा युधिष्ठिर ने राजसूय यज्ञ को सम्पन्न किया जिसमें श्रेष्ठ विष्णु को होमादि से सन्तुष्ट किया जा रहा था।[19] आपत्काल में मूढ–मन को धारण करने वाले दुर्योधन ने पौण्डरीक यज्ञ किया।[20] वह जयद्रथ अपने वध की बात सुनकर तत्क्षण यज्ञ से उत्पन्न कुशलता पर विचार करने लगा और मुझे यज्ञ सम्पादन से ही इस महान संकट से ही मुक्ति मिलेगी।[21] धनधान्य से पूर्ण पृथ्वी को दिग्विजय के द्वारा वश में करते हुए युधिष्ठिर ने श्रेष्ठ और पूज्य अश्वमेघ यज्ञ सम्पादित किया–

वसुधान्यवती वशयन् वसुधां परम हयमेघमनल्परसम्।
सहितो यजनाभिमुखैः सहितो महितं विततान निकामहितम्।।[22]

दान

दान की परम्परा प्राचीन काल से ही विद्यमान है जिसमें राजा अपनी प्रजा को दान किया करते थे। अन्नदान, वस्त्रदान, विद्यादान, अभयदान और धनदान ये सारे दान इंसान को पुण्य का भागी बनाते हैं। किसी भी वस्तु का दान करने से मन को सांसारिक आसक्ति से छुटकारा मिलता है। श्रीरामचरितमानस में गोस्वामी तुलसीदास ने कहा है कि परहित के समान कोई धर्म नहीं है और दूसरों को कष्ट देने के समान कोई पाप नहीं है।

महाकवि ने प्रथम आश्वास में ही दान की महनीयता का वर्णन किया है–

ज्ञानसमग्रामेयं निवसन्तं विप्रसन्तमग्रामे यम्।
तिलकं भूमावाहुर्यस्यार्थिषु दत्तभूमिभूमा वाहुः।।[23]

राक्षस के भक्षण के लिए अपने पुत्र भीम को दान करके कुन्ती ने जिस साहस और दानशीलता का परिचय दिया है उससे उनकी महानता प्रकट होती है।[24]

उस मायासुर ने युधिष्ठिर के लिए सुन्दर कारीगरी से व्याप्त सभा का यथाशक्ति निर्माण किया। आनन्द के कारण रोमांचित युधिष्ठिर ने दान देकर उस सभागृह में प्रवेश किया–

तेन च तरसा रचिता सभा नरेन्द्राय चारुतर सारचिता।
तां च सदानन्दत्वादुद्गत पुलकोऽविशत्स दानं दत्वा।।[25]

महाकवि ने अपने महाकाव्य में भरत, भोज और नल आदि दानवीर राजाओं का वर्णन प्रतिपादित किया है।[26] कर्ण अपनी दानशीलता के लिए जगत्प्रसिद्ध था इसलिए वह पापरहित था।

गुरुपूजा

महाकवि वासुदेव ने युधिष्ठिर विजय महाकाव्य के प्रथम सर्ग में गुरु की महिमा का वर्णन किया है–

उस समय के तत्कालीन राजा कुलशेखर के शासन–काल में आदि परमेश्वर विष्णु के नाम का चिन्तन करने वाले एवं वेदों का अध्ययन करने वाले 'भारत गुरु' नाम के गुरु हुए।[26] पुराणों का परमाचार्य महान भारतगुरु को जिन्हें साधु लोग शान्त स्वरूप, अमङ्गल से उत्पन्न होने वाले सन्तों के कष्टों के अपहर्ता होने के कारण परमेश्वर कहते हैं उनकी भव्य पूजा अर्चना की–

यं प्राप रमा चार्य देवी च गिरां पुराण परमाचार्यम्।
यमशुभसन्तोदान्तं परमेश्वरमुपदिशन्ति सन्तो दान्तम्।।[27]

युधिष्ठिरादि राजकुमारों ने तेज, बल, क्षमा, दया और रूपादि गुणों से सारे देवताओं को भी जीत लिया था। उन्होंने गुरु द्रोणाचार्य और कृपाचार्य की कृपा से महास्त्र की प्राप्ति की थी। गुरु की कृपा साधक के लिए परमावश्यक बतलायी गयी है। इनके बिना न ही विवेक होता है और न मोक्ष ही। इसलिए शास्त्रों में गुरु की स्तुति–**गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु ..... गुरुः साक्षात् परब्रह्म** आदि शब्दों में की गयी है।

गुरु की सेवा में तत्पर अर्जुन उस धनुष को उठाने के लिए गुरु के पास से उठा। महाकाव्य में वर्णित है कि गुरुजनों की सेवा में सत्यता के परिपालन से कार्य में विघ्न उत्पन्न नहीं हो सकते–

अपि समरे सत्यस्य स्याद्बाधा गुरुजनान्तरे सत्यस्य।
तस्मात्साहसमासु प्रधनं पश्यामि शत्रुसाहसमासु।।[28]

इस प्रकार भारत भूमि पर विश्व के लगभग सभी धर्मों के समुदाय रहते हैं। समय के साथ–साथ उनका भारतीकरण भी हुआ। सभी धर्मों के समान धार्मिक नियम आपसी प्रेम सद्भाव, भाईचारे, सुविचार, सत्कर्म पर बल दिया गया है। वर्तमान में कुछ संकीर्णवादी विचारधारा के लोग समाज में सम्प्रदायवाद को बढ़ावा दे रहे हैं। हमें इसे बचाना है, क्योंकि सच्चा धर्म मानवता का है जो हमें पतन से रोकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची

1. महाभारत, अनुशासन पर्व, 54/9
2. महाभारत, उद्योग पर्व–61/15
3. महाभारत, कर्ण पर्व–109/58
4. वैशेषिक दर्शन
5. युधिष्ठिर विजय महाकाव्य–5/62
6. युधिष्ठिर विजय महाकाव्य–5/66
7. युधिष्ठिर विजय महाकाव्य–1/15
8. युधिष्ठिर विजय महाकाव्य–1/20
9. युधिष्ठिर विजय महाकाव्य–1/1
10. युधिष्ठिर विजय महाकाव्य–1/19, 18
11. युधिष्ठिर विजय महाकाव्य–1/15
12. युधिष्ठिर विजय महाकाव्य–4/80
13. युधिष्ठिर विजय महाकाव्य–2/32

14. युधिष्ठिर विजय महाकाव्य–1/71, 21
15. युधिष्ठिर विजय महाकाव्य–1/19
16. युधिष्ठिर विजय महाकाव्य–2/59
17. युधिष्ठिर विजय महाकाव्य–2/56
18. युधिष्ठिर विजय महाकाव्य–3/31, 32, 35
19. युधिष्ठिर विजय महाकाव्य–3/54, 55, 61
20. युधिष्ठिर विजय महाकाव्य–5/50
21. युधिष्ठिर विजय महाकाव्य–7/95
22. युधिष्ठिर विजय महाकाव्य–8/104
23. युधिष्ठिर विजय महाकाव्य–1/8
24. युधिष्ठिर विजय महाकाव्य–1/59
25. युधिष्ठिर विजय महाकाव्य–3/28
26. युधिष्ठिर विजय महाकाव्य–1/6
27. युधिष्ठिर विजय महाकाव्य–1/7
28. युधिष्ठिर विजय महाकाव्य–4/39